समाधिपाद

संगति *— समाधिपाद में समाहित-चित्त वालों के लिए समाधि के उपाय बतलाते हैं ।*

अथ योगानुशासनम् ॥१॥

अथ — अब (आरम्भ करते हैं)
योग — योग (की)
अनु-शासनम् — पहले से विद्यमान (लक्षण, भेद, उपाय और फलों सहित) शिक्षा (देने वाले ग्रन्थ को) ।

संगति *— योग की क्या परिभाषा है ?*

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥२॥

योगः — योग
चित्त — चित्त अर्थात् अन्तःकरण[1] (की)

[1] **अन्तःकरण** — चित्त अर्थात् भूत और भविष्य स्मरण, अहंकार अर्थात् अहं और मम, बुद्धि अर्थात् निश्चय और अवधारण, मन अर्थात् सङ्कल्प और विकल्प ।

अन्तःकरण की पाँच अवस्थाएँ — मूढ़ अर्थात् तमस् प्रधान, क्षिप्त अर्थात् रजस् प्रधान, विक्षिप्त अर्थात् तमस् और रजस् प्रधान, एकाग्र अर्थात् सत्त्व प्रधान, निरुद्ध अर्थात् गुणातीत ।

वृत्ति — वृत्तियों (का)
निरोधः — रुकना अर्थात् वृत्तियों का अन्तर्मुख हो कर चित्त में लीन हो जाना (है) ।

संगति *— वृत्तियों के निरोध होने पर पुरुष की क्या अवस्था होती है?*

तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम् ॥३॥

तदा — तब (वृत्तियों के निरोध होने पर)
द्रष्टुः — द्रष्टा अर्थात् पुरुष की
स्वरूपे — अपने ही रूप अर्थात् चेतन-मात्र में
अवस्थानम् — स्थिति (होती है) ।

संगति *— वृत्तियों के निरोध से भिन्न व्युत्थान-अवस्था अर्थात् निरोध के विरोध में पुरुष का क्या स्वरूप होता है ?*

वृत्तिसारूप्यमितरत्र ॥४॥

इतरत्र — दूसरी अर्थात् वृत्तियों के निरोध से भिन्न अवस्था में (पुरुष)
वृत्ति — वृत्ति (के)
सारूप्यम् — समान रूप (होता है) ।

संगति *— वृत्तियाँ कितने प्रकार की होती हैं ?*

मूढ़, क्षिप्त, विक्षिप्त अन्तःकरण का धर्म — काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और मात्सर्य ।

वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः ॥५॥

वृत्तयः — (उपर्युक्त) वृत्तियाँ
पञ्चतय्यः — पाँच प्रकार (की होती हैं, जो)
क्लिष्टाः — क्लिष्ट अर्थात् राग-द्वेष आदि क्लेशों की कारण (और)
अक्लिष्टाः — अक्लिष्ट अर्थात् राग-द्वेष आदि क्लेशों का नाश करने वाली (होती हैं) ।

संगति *— उक्त पाँच वृत्तियों के क्या नाम हैं ?*

प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः ॥६॥

प्रमाण — प्रमाण,
विपर्यय — विपर्यय,
विकल्प — विकल्प,
निद्रा — निद्रा (और)
स्मृतयः — स्मृति, (ये पाँच प्रकार की वृत्तियाँ हैं) ।

संगति *— प्रमाण-वृत्ति के क्या भेद हैं ?*

प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि ॥७॥

प्रत्यक्ष — यथार्थ ज्ञान, (कार्य और कारण[२] के सम्बन्ध से उत्पन्न)
अनुमान — अप्रत्यक्ष पदार्थ का ज्ञान (और)

[२] **कार्य और कारण** — प्रत्येक कार्य (पदार्थ) अपने कारण में अव्यक्त और व्यक्त रूप से विद्यमान रहता है । वस्तुतः कोई भी पदार्थ पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होता है । कारण से कार्य की अभिव्यक्ति कार्य का उत्पन्न होना है और कार्य का कारण में लय

आगमाः — वेद, शास्त्र तथा आप्त-पुरुष के वचन, (ये तीन प्रकार की इन्द्रियों और विषय के सम्बन्ध में)
प्रमाणानि — प्रमाण (वृत्तियाँ हैं) ।

संगति *— विपर्यय-वृत्ति क्या है ?*

विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् ॥८॥

विपर्ययः — विपर्यय (पदार्थ का)
मिथ्या — भ्रामक
ज्ञानम् — ज्ञान (है, जो)
अतद्रूप — उस (पदार्थ के वास्तविक) रूप में नहीं
प्रतिष्ठम् — प्रतिष्ठित (है) ।

संगति *— विकल्प-वृत्ति के क्या लक्षण हैं ?*

शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः ॥९॥

शब्द — (जो ज्ञान) शब्द (से उत्पन्न)
ज्ञान — ज्ञान (के)
अनुपाती — पीछे चलने वाला (और)
वस्तु — वस्तु (की सत्ता से)
शून्यः — शून्य (हो, वह)
विकल्पः — विकल्प अर्थात् कल्पना (कहलाता है) ।

संगति *— निद्रा-वृत्ति क्या है ?*

होना कार्य का अभाव है । सांख्य के इस सिद्धान्त को सत्यकार्यवाद कहते हैं ।

अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा ॥१०॥

अभाव — (जाग्रत और स्वप्न अवस्था की) अनुपस्थिति (के ज्ञान की)
प्रत्यय — प्रतीति (को)
आलम्बना — आश्रय देने वाली
वृत्तिः — वृत्ति (को)
निद्रा — निद्रा अर्थात् सुषुप्ति (कहते हैं)।

***संगति** — स्मृति-वृत्ति क्या है ?*

अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः ॥११॥

अनुभूत — (प्रमाण, विपर्यय, विकल्प और निद्रा के) अनुभव किए हुए
विषय — विषय (का)
असम्प्रमोषः — न खोया जाना अर्थात् किसी सहायक विषय को पा कर संस्कार का फिर से प्रकट हो जाना
स्मृतिः — स्मृति (कहलाता है)।

***संगति** — उक्त पाँचों प्रकार की वृत्तियों के निरोध के क्या उपाय हैं ?*

अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः ॥१२॥

अभ्यास — अभ्यास (और)
वैराग्याभ्याम् — वैराग्य से
तत् — उन (पाँच प्रकार की वृत्तियों का)
निरोधः — निरोध (होता है)।

***संगति** — अभ्यास क्या है ?*

तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यासः ॥१३॥

तत्र — उन (दोनों, अभ्यास और वैराग्य, में से चित्त की)
स्थितौ — स्थिरता के लिए (निरंतर)
यत्नः — प्रयत्न (करना)
अभ्यासः — अभ्यास (है)।

***संगति** — अभ्यास दृढ़ कैसे होता है ?*

स तु दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढभूमिः ॥१४॥

तु — किन्तु
सः — वह (अभ्यास)
दीर्घ — बहुत
काल — समय (तक),
नैरन्तर्य — निरन्तर (और)
सत्कार — सत्कार से (ठीक ठीक)
आसेवितः — सेवन किया हुआ
दृढ — दृढ़
भूमिः —अवस्था (वाला हो जाता है)।

***संगति** — दो प्रकार के वैराग्य, अपर और पर, में से सम्प्रज्ञात समाधि के साधन अपर-वैराग्य के क्या लक्षण हैं ?*

दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम् ॥१५॥

दृष्ट — देखे हुए अर्थात् लोक में दृष्टिगोचर होने वाले (और वेद शास्त्रों द्वारा)
आनुश्रविक — सुने हुए
विषय — विषयों (में, जो)

वितृष्णस्य — तृष्णा रहित (है), उसका
वैराग्यम् — वैराग्य
वशीकार — अपर-वैराग्य
संज्ञा — नाम वाला (है) ।

संगति *— असम्प्रज्ञात समाधि का साधन पर-वैराग्य क्या है ?*

तत्परं पुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम् ॥१६॥
तत् — वह (वैराग्य)
परम् — पर अर्थात् सबसे श्रेष्ठ (है, जिसमें)
पुरुष-ख्यातेः — प्रकृति-पुरुष के विवेकज्ञान अर्थात् विवेकख्याति (के उदय होने से पुरुष)
गुण — गुणों (से)
वैतृष्ण्यम् — तृष्णा रहित (हो जाता है) ।

संगति *— अब अपर-वैराग्य वाली सम्प्रज्ञात अर्थात् सबीज समाधि के चार अवान्तर भेद अर्थात् वितर्क, विचार, आनन्द और अस्मिता स्वरूप को बतलाते हैं ।*

वितर्कविचारानन्दास्मितारूपानुगमात् सम्प्रज्ञातः ॥१७॥
वितर्क — पाँच स्थूलभूत-विषयक तथा स्थूल इन्द्रिय-विषयक ग्राह्य भावना,
विचार — सूक्ष्मभूत-विषयक तथा सूक्ष्म इन्द्रिय-विषयक ग्राह्य भावना,
आनन्द — तन्मात्राओं तथा इन्द्रियों के कारण सत्त्व-प्रधान अहंकार-विषयक केवल ग्रहण भावना (और)
अस्मिता — चेतन से प्रतिबिम्बित चित्तसत्त्व बीज रूप अहंकार-विषयक ग्रहीतृ भावना, (इन से सम्बद्ध)

रूप — स्वरूपों (के)
अनुगमात् — सम्बन्ध से (जो चित्त की वृत्तियों का निरोध है, वह)
सम्प्रज्ञातः — सम्प्रज्ञात (समाधि है) ।

संगति *— अब पर-वैराग्य वाली असम्प्रज्ञात अर्थात् निर्बीज समाधि का लक्षण बतलाया जाता है ।*

विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः ॥१८॥
विराम — (सब वृत्तियों के) निरोध (के)
प्रत्यय — कारण अर्थात् पर-वैराग्य (के)
पूर्वः — पुनः पुनः
अभ्यास — अभ्यास (से जो)
संस्कार — संस्कार (मात्र)
शेषः — शेष (रह जाते हैं, वे)
अन्यः — दूसरी अर्थात् असम्प्रज्ञात (समाधि हैं) ।

संगति *— किस प्रकार के साधक का योग शीघ्र सिद्ध होता है ?*

भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम् ॥१९॥
विदेह — योगी जो पिछले जन्म में वितर्कानुगत और विचारानुगत समाधि सिद्ध कर चुके हैं और आनन्दानुगत समाधि का अभ्यास कर रहे हैं (और)
प्रकृतिलयानाम् — योगी जो पिछले जन्म में आनन्दानुगत समाधि सिद्ध कर चुके हैं और अस्मितानुगत समाधि का अभ्यास कर रहे हैं, (उन दोनों को अगले जन्म में)
भव — जन्म (से ही असम्प्रज्ञात समाधि की)
प्रत्ययः — प्रतीति (होती है) ।

संगति *— भवप्रत्यय से भिन्न उपायप्रत्यय*[3] *वालों के लिए असम्प्रज्ञात समाधि के क्या उपाय हैं ?*

श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ॥२०॥

इतरेषाम् — दूसरे (योगी जो विदेही और प्रकृतिलय नहीं हैं), उनको
श्रद्धा — श्रद्धा,
वीर्य — उत्साह,
स्मृति — ज्ञान के संस्कारों के जाग्रत होने,
समाधि — समाधि (और)
प्रज्ञा-पूर्वकः — प्रज्ञा अर्थात् विवेक, (इन पाँचों से असम्प्रज्ञात समाधि सिद्ध होती है) ।

संगति *— उपायप्रत्यय वालों की सबसे अन्तिम श्रेणी अर्थात् अधिमात्र उपाय और तीव्र संवेग वाले योगियों को शीघ्र समाधि लाभ होता है । उन्हीं का वर्णन अगले सूत्र में करते हैं ।*

[3] **उपायप्रत्यय** — श्रद्धा, वीर्य आदि उपाय तीन प्रकार के अर्थात् मृदु, मध्यम और अधिमात्र होते हैं । इन तीनों के भी तीन प्रकार के संवेग अर्थात् मृदु, मध्यम और अधिमात्र होते हैं । इस प्रकार उपायप्रत्यय वालों के नौ भेद अर्थात् मृदु उपाय और मृदु संवेग, मृदु उपाय और मध्यम संवेग, मृदु उपाय और तीव्र संवेग, मध्यम उपाय और मृदु संवेग, मध्यम उपाय और मध्यम संवेग, मध्यम उपाय और तीव्र संवेग, अधिमात्र उपाय और मृदु संवेग, अधिमात्र उपाय और मध्यम संवेग, अधिमात्र उपाय और तीव्र संवेग होते हैं।

तीव्रसंवेगानामासन्नः ॥२१॥

तीव्र — तीव्र
संवेगानाम् — गति अर्थात् वैराग्य (और श्रद्धा, वीर्य आदि उपायों की अधिमात्र) से (समाधि)
आसन्नः — निकटतम (होती है) ।

संगति *— उक्त तीव्र संवेग के क्या भेद हैं ?*

मृदुमध्याधिमात्रत्वात् ततोऽपि विशेषः ॥२२॥

ततः — उस
मृदु — हल्के (तीव्र संवेग) और
मध्य — मध्यम (तीव्र संवेग से)
अपि — भी
अधिमात्रत्वात् — अधिमात्र (तीव्र संवेग) में (समाधि लाभ में)
विशेषः — विशेषता (होती है) ।

संगति *— क्या पूर्वोक्त अधिमात्र उपाय और अधिमात्र तीव्र संवेग से ही शीघ्रतम समाधि लाभ होता है अथवा कोई और भी सुगम उपाय है?*

ईश्वरप्रणिधानाद्वा ॥२३॥

वा — अथवा
ईश्वर-प्रणिधानात् — ईश्वर के गुणों का पुनः पुनः चिन्तन करने और कर्म और कर्म-फल ईश्वर के प्रति समर्पण करने से (शीघ्रतम समाधि लाभ होता है) ।

संगति *— ईश्वर के क्या लक्षण हैं ?*

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः ॥२४॥

क्लेश — क्लेश,
कर्म — कर्म, (कर्मों के)
विपाक — फल (और वासनाओं के)
आशयैः — आवास अर्थात् वासनाओं से
अपरामृष्टः — स्पर्श रहित
ईश्वरः — ईश्वर (अन्य)
पुरुष-विशेषः — पुरुषों (से) विशेष (चेतन है) ।

संगति *— ईश्वर की क्या विशेषता है ?*

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम् ॥२५॥

तत्र — उस (ईश्वर में)
सर्वज्ञ — सर्वज्ञता (का)
बीजम् — कारण अर्थात् स्रोत
निरतिशयम् — अतिशय रहित अर्थात् सीमा को प्राप्त (है) ।

संगति *— ईश्वर की और क्या विशेषता है ?*

पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् ॥२६॥

पूर्वेषाम् — (वह ईश्वर) पूर्व उत्पन्न (गुरुओं) का
अपि — भी
गुरुः — गुरु (है, क्योंकि वह ईश्वर)
कालेन — समय से
अनवच्छेदात् — सीमित नहीं अर्थात् सर्वकाल में विद्यमान (है) ।

संगति *— ईश्वर का वाचक नाम क्या है ?*

तस्य वाचकः प्रणवः ॥२७॥

तस्य — उस (ईश्वर का)
वाचकः — बोधक शब्द अर्थात् नाम
प्रणवः — ओ३म्[४] (है) ।

संगति *— ईश्वर-प्रणिधान का क्या लक्षण है ?*

तज्जपस्तदर्थभावनम् ॥२८॥

तत् — उस (प्रणव का)
जपः — जप (और)
तत् — उस (ईश्वर के)
अर्थ — अर्थस्वरूप (का)
भावनम् — ध्यान करना अर्थात् पुनः पुनः चिन्तन करना (ईश्वर-प्रणिधान है) ।

संगति *— असम्प्रज्ञात समाधि से पूर्व ईश्वर-प्रणिधान के क्या विशेष फल हैं ?*

ततः प्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यन्तरायाभावश्च ॥२९॥

ततः — उस (ईश्वर-प्रणिधान से पुरुष को)
प्रत्यक्-चेतना — जीवात्मा (की)
अधिगमः — प्राप्ति अर्थात् साक्षात्कार
अपि — भी (होता है)

---

[४] **परिशिष्ट** — ॐ तालिका ।

च — और
अन्तराय — विघ्नों (का)
अभावः — अभाव (भी) ।

***संगति** — ईश्वर-प्रणिधान से जिन विघ्नों का अभाव बतलाया गया है, उन विघ्नों का क्या स्वरूप है ?*

व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥३०॥

व्याधि — रोग,
स्त्यान — चित्त की अकर्मण्यता अर्थात् इच्छा होने पर भी योग में सामर्थ्य न होना,
संशय — शंका,
प्रमाद — समाधि के साधनों का अनुष्ठान न करना,
आलस्य — आलस्य,
अविरति — विषयों में तृष्णा बनी रहना,
भ्रान्ति-दर्शन — मिथ्या ज्ञान,
अलब्ध-भूमिकत्व — रुकावट के कारण समाधि में न पहुँच पाना,
अनवस्थितत्वानि — समाधि में पहुँच कर उस में चित्त का न ठहरना,
ते — ये
चित्त — चित्त (के नौ)
विक्षेपाः — विक्षेप, (योग के मूल)
अन्तरायाः — विघ्न (हैं) ।

***संगति** — पूर्वोक्त नौ विक्षेप अगले पाँच उपविक्षेपों को उपस्थित करते हैं ।*

दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ॥३१॥

दुःख — दुःख,
दौर्मनस्य — इच्छा पूर्ति न होने पर मन में क्षोभ,
अङ्गमेजयत्व — शरीर के अङ्गों का काँपना, (बिना इच्छा के)
श्वास — साँस का अंदर आना (और बिना इच्छा के)
प्रश्वासाः — साँस का बाहर जाना, (ये पाँच उप)
विक्षेप — विक्षेप (पूर्वोक्त नौ अन्तरायों के)
सहभुवः — साथ होते हैं ।

***संगति** — विक्षिप्त चित्त वालों के लिए नौ विक्षेपों और पाँच उपविक्षेपों के निरोध के क्या उपाय हैं ?*

तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः ॥३२॥

तत् — उन (विक्षेपों को)
प्रतिषेधार्थम् — दूर करने के लिए
एकतत्त्व — एक तत्त्व अर्थात् इष्ट (का)
अभ्यासः — अभ्यास (करना चाहिए) ।

***संगति** — चित्त के मल को दूर करने का क्या उपाय है ?*

मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम् ॥३३॥

सुख — सुखी,
दुःख — दुःखी,
पुण्य — पुण्यात्मा (और)
अपुण्य — पापात्मा (के)

विषयाणाम् — विषयों में (यथाक्रम से)
मैत्री — मित्रता,
करुणा — दया,
मुदिता — हर्ष (और)
उपेक्षाणाम् — उदासीनता (की)
भावनातः — भावना (के अनुष्ठान) से
चित्त-प्रसादनम् — चित्त निर्मल और प्रसन्न (होता है) ।

संगति *— निर्मल और प्रसन्न चित्त वाले उत्तम अधिकारियों के लिए चित्त-स्थिति का पहला उपाय क्या है ?*

प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य ॥३४॥

वा — या तो
प्राणस्य — प्राण को (नासिका द्वारा प्रयत्न विशेष से)
प्रच्छर्दन — बाहर फेंकने (और)
विधारणाभ्याम् — रोकने से (मन की स्थिति को बाँधा जाता है) ।

संगति *— चित्त-स्थिति अथवा निरोध का दूसरा उपाय क्या है ?*

विषयवती वा प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनसः स्थितिनिबन्धिनी ॥३५॥

वा — अथवा (दिव्य गन्ध, रस, रूप, स्पर्श अथवा शब्द)
विषयवती — विषयों वाली
प्रवृत्तिः — प्रवृत्ति
उत्पन्ना — उत्पन्न (हो कर)
मनसः — मन की
स्थिति — स्थिति (को)
निबन्धिनी — बाँधने वाली (होती है) ।

संगति *— चित्त-स्थिति का तीसरा उपाय क्या है ?*

विशोका वा ज्योतिष्मती ॥३६॥

वा — अथवा
विशोका — शोक रहित (सात्त्विक)
ज्योतिष्मती — प्रकाश वाली (प्रवृत्ति भी मन की स्थिति को बाँधने वाली होती है) ।

संगति *— चित्त-स्थिति का चौथा उपाय क्या है ?*

वीतरागविषयं वा चित्तम् ॥३७॥

वा — अथवा
राग — राग
वीत — रहित
विषयम् — विषय वाला (महान् योगियों का)
चित्तम् — चित्त (मन की स्थिति को बाँधने वाला होता) है ।

संगति *— चित्त-स्थिति का पाँचवाँ उपाय क्या है ?*

स्वप्ननिद्राज्ञानालम्बनं वा ॥३८॥

वा — अथवा
स्वप्न — स्वप्न (और)
निद्रा — निद्रा (के)
ज्ञान — ज्ञान (का)
आलम्बनम् — आश्रय (करने वाला चित्त मन की स्थिति को बाँधने वाला होता है) ।

संगति — चित्त-स्थिति का छठा उपाय क्या है ?

यथाभिमतध्यानाद्वा ॥३९॥

वा — अथवा (जिसको)
यथा — जो
अभिमत — इष्ट (हो, उस के)
ध्यानात् — ध्यान से (मन की स्थिति बँध जाती है) ।

संगति — चित्त-स्थिति का क्या फल है ?

परमाणुपरममहत्त्वान्तोऽस्य वशीकारः ॥४०॥

अस्य — (पूर्वोक्त उपायों से स्थिर हुए चित्त) का (सूक्ष्म पदार्थ)
परमाणु — परमाणु (आदि से ले कर)
परम-महत्त्व-अन्तः — परम महान् (पदार्थों में)
वशीकारः — वशीकार (हो जाता है) ।

संगति — स्थिर चित्त की क्या स्थिति होती है ?

क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः ॥४१॥

क्षीण — क्षीण (रजस् और तमस् गुण)
वृत्तेः — वृत्ति (वाले चित्त का)
अभिजातस्य — उत्तम जाति की (स्फटिक)
मणेः — मणि (की)
इव — भाँति
ग्रहीतृ — ग्रहीता अर्थात् अस्मिता,
ग्रहण — ग्रहण अर्थात् इन्द्रिय (और)

ग्राह्येषु — ग्राह्य अर्थात् स्थूल भूत तथा सूक्ष्म तन्मात्रा (विषय) में
तत्स्थ — एकाग्र स्थित (हो कर)
तदञ्जनता — उसी (विषय के) स्वरूप को प्राप्त हो जाना (सम्प्रज्ञात)
समापत्तिः — समाधि अर्थात् चित्त का विषय के साथ तदाकार हो जाना (है) ।

संगति — अब इस समापत्ति अर्थात् सबीज-समाधि के चार भेदों में से पहले भेद का वर्णन करते हैं ।

तत्र शब्दार्थज्ञानविकल्पैः संकीर्णा सवितर्का समापत्तिः ॥४२॥

तत्र — उन (समापत्तियों में से)
शब्द — शब्द,
अर्थ — अर्थ (और विषय)
ज्ञान — ज्ञान (के तीनों)
विकल्पैः — भेदों से
संकीर्णा — मिली हुई (समाधि)
सवितर्का — सवितर्क अर्थात् विशेष तर्क सहित (अथवा सविकल्प)
समापत्तिः — समापत्ति (कहलाती है) ।

संगति — समापत्ति का दूसरा भेद क्या है ?

स्मृतिपरिशुद्धौ स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा निर्वितर्का ॥४३॥

स्मृति — स्मृति (के)
परिशुद्धौ — शुद्ध अर्थात् आगम और अनुमान के शब्द और ज्ञान से रहित (हो जाने पर)
स्वरूप — अपने रूप (से)

शून्या — शून्य
इव — जैसी (केवल ध्येय)
अर्थ — अर्थ
मात्र — मात्र (सी)
निर्भासा — भासने वाली (चित्त वृत्ति)
निर्वितर्का — निर्वितर्क अथवा निर्विकल्प (समापत्ति कहलाती है) ।

***संगति** — समापत्ति का तीसरा और चौथा भेद क्या है ?*

एतयैव सविचारा निर्विचारा च सूक्ष्मविषया व्याख्याता ॥४४॥
एतया — इन अर्थात् पूर्वोक्त सवितर्क और निर्वितर्क समापत्तियों (के निरूपण) से
एव — ही
सविचारा — सविचार (और)
निर्विचारा — निर्विचार (समापत्तियाँ)
च — भी
सूक्ष्म — सूक्ष्म
विषया — विषयों (में)
व्याख्याता — वर्णन (की हुईं समझनी चाहिएं) ।

***संगति** — सूक्ष्म विषय कहाँ तक हैं ?*

सूक्ष्मविषयत्वं चालिङ्गपर्यवसानम् ॥४५॥
च — तथा
सूक्ष्म — सूक्ष्म
विषयत्वम् — विषयता
अलिङ्ग — लिङ्ग-रहित अर्थात् मूलप्रकृति (किसी में न लीन होने

वाली गुणों की साम्यावस्था)
पर्यवसानम् — पर्यन्त अर्थात् सीमा तक (फैली हुई है) ।

***संगति** — अतः सवितर्क, निर्वितर्क, सविचार और निर्विचार, ये चारों समापत्तियाँ सबीज-समाधि हैं । निर्विचार की उच्चतर और उच्चतम अवस्थाएं, क्रमशः, आनन्दानुगत और अस्मितानुगत कहलाती हैं ।*

ता एव सबीजः समाधिः ॥४६॥
ता — ये (पूर्वोक्त चारों समापत्तियाँ)
एव — ही
सबीजः — सबीज
समाधिः — समाधि (कहलाती हैं) ।

***संगति** — सबसे श्रेष्ठ निर्विचार-समाधि का क्या फल है ?*

निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः ॥४७॥
निर्विचार — निर्विचार (की)
वैशारद्ये — प्रवीणता से
अध्यात्म — प्रज्ञा (की)
प्रसादः — निर्मलता (होती है) ।

***संगति** — इस प्रज्ञा का सार्थक नाम क्या है ?*

ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा ॥४८॥
तत्र — उस (अध्यात्म-प्रसाद से)
ऋतम्भरा — सत्य को धारण करने वाले (और अविद्या से रहित)
प्रज्ञा — ज्ञान (की उत्पत्ति होती है) ।

संगति — ऋतम्भरा प्रज्ञा की क्या श्रेष्ठता है ?

श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्यविषया विशेषार्थत्वात् ॥४९॥

श्रुत — आगम (और)
अनुमान — अनुमान (की)
प्रज्ञाभ्याम् — प्रज्ञा से (ऋतम्भरा प्रज्ञा का)
विषया — विषय
अन्य — भिन्न (है),
विशेष — विशेष (रूप से)
अर्थत्वात् — अर्थ को साक्षात्कार करने के सन्दर्भ में ।

संगति — ऋतम्भरा प्रज्ञा का क्या फल है ?

तज्जः संस्कारोऽन्यसंस्कारप्रतिबन्धी ॥५०॥

तत्-जः — उस (ऋतम्भरा-प्रज्ञा) से उत्पन्न होने वाला
संस्कारः — संस्कार
अन्य — दूसरे (सब व्युत्थान के)
संस्कार — संस्कारों (को)
प्रतिबन्धी — रोकने वाला (होता है) ।

संगति — अब निर्बीज-समाधि अर्थात् कैवल्य अवस्था क्या है ?

तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः ॥५१॥

तस्य — (पर-वैराग्य द्वारा) उस (ऋतम्भरा-प्रज्ञा-जन्य संस्कार) के
अपि — भी
निरोधे — निरोध (हो जाने पर)
सर्व — सब (पुरातन और नूतन संस्कारों के)

निरोधात् — निरोध से
निर्बीजः — निर्बीज
समाधिः — समाधि (की उपलब्धि होती है) ।

-ॐ-